

आशा भोंसले

1321

ASHA ARCHIVES

वष का दू का नरु न का न द्रु तिरि मी नु क नो ज्ञा तिरि श्री मह क
 लो ता श्रु क सु ग्रा वलि जा पिरि १ सा थ के १ पू पु के मी नु ले दी कि
 श्री गि नी रु न म ता प के १ नु पु कि जाल से १ पू च से १ या गि नि या गा
 की प्र द द वि रू प द म प जा प मी ला ध ने १ स न न प रू नु सु स प म स
 १ त ह्य दि य क नि क र्ति ता स फ पा ताल से र व नि १ सि द्वि त व्या ह
 ता व र्हे त ल क्ति ता य १ प १० रु लु के नु काल दि काल प्रि काले व रु ४
 प र्क प र स फ वा शी न चि १ स र्म न द्र १ स दा मा न व १ सा पि न सु

अ २

मि श्री गार् लु व न प र्व ता न्य पि सं न द ह्य द वि पू ज न ना गा महा ल
 श्री प्र द १ ह म श्री गान्य दा तान स का श्व व क पु धा महा दा प द रू
 प म च्य नि स स स द वि त दि य म र्ख पू र्ण व न्दान का ने ह्य न दि
 य मा लिके स क उ ला दू र ग लु रु ल १ य पि र्व भ ने र्वा ग पा ले रु ना
 व द्वा पा दा र्ज ले र्क पि तै ना म र्क को र्क ना द वि म च्य नि द्या न मी हा वा
 थि रि १ स स स या दा न वि द द र्क म महा कालि काला गि रं १ पु र
 १ रु न १ ग वि द पु र्क रु व रु कू पू र्वा य १ र्मे लि मा ला ल स त्य द

किं जलक सत्त्वी जलन सत्त्वि विना मि कहे न वहे न वी न जन न्यग
ता हं कम स्याप गार्थं लि वं ॥ न वरु ता मा हा द वि ह न व न म हा
म ना न ता लिंग वि नि र्दिष्ट नि र्ज ना प त म स्थ ति ॥ ॥ नु ति श्री क
ला लि का म्ना यः श्री म न् कूटु का म न् आ हा य म्ना यः की मा म्ना
धि का नः दि ति य प त ल मा लि नि द रु क रु व ४ स म्ना य ४ ॥ ॥
१ त मा यं क व ल्या र्ध नी ॥ ३ ॥ म य ना म्ना य पा द की ॥ १ श्री कू ल प
व व रु क ना थ य पा द की ॥ व लि ॥ ३ ॥ ना ना म्ना य पा द की ॥ ना

मा क न न ॥ १ श्री (५) थं क टा दि प द म् कि द वी म हा श्री कू टु पा ना
य पा द की ॥ व लि ॥ ३ ॥ श वा म्ना य पा द की ॥ ३ श्री र्ध जा ग्नि म्ना
पा द की ॥ व लि ॥ ३ ॥ यं क ति त या ग्नि नी पी ० जा कू टु जा जा ग जा
ग रुं जा स द ह जा कू ल जा यं क ति त या ग्नि नी क व ति रु च ति ग
ध ति दि क व ति म नु च ति न स च नी ने का क नी दि क ति ति क ति
नि च रु १ य कू ष ट ह्य का रु क न वा क नी नी ति ज ग म नी नी ज थ प र्य
ना ना व लि ग रु २ म म सि दि क र्ध नी १ २ रु ग्ना हा व लि ग रु १

ॐ ह ति ष्ठ ॐ ह सी नि धान ॐ ह सी त्रि न द्र त्वा दि ॥ अ वि द व ॥
 आ वा अ स स न द ॥ ॥ त ता उ गु व ला द ग लि स क र्म ख
 उ आ य ता ल र ग वै र्क ॥ अ धा न ग र्क न म ॥ ज न का त ना य ॥
 क न्दा स ना य न म ॥ ना ना स ना य न म ॥ प रा स ना य न म ॥ क र्क
 ना स ना य न म ॥ क र्क का स ना य न म ॥ य या स ना य न म ॥
 सिं हा स ना य न म ॥ म ति षा स ना य न म ॥ म र्का स ना य न म ॥ नि
 र्ग र्का स ना य न म ॥ अ न ॥ ॐ कौ त य वा मि क ला व लु ना ना य

प सा ह ता । दि व व रु य नी ध नी स हि षा स त ग म नि नि ॥ कि नि
 ति कृ षु ला का लि कं य ने म नि ना प ने ४ ॥ त त माला वि वि षु
 हा त माला व त मि ते ४ ॥ अ षा द ग तु आ फु ना पि न व द रु नी न हा
 । स र्व लं का न र्म य का त ठि का ति स म पु ला ॥ र म ष ग न त था च क
 व जा क स थ ना श ला । व त द रु म न ह रु षे । अ न पा उ रु सा रि
 ता । द क्षि ल न क ना न ता य था ला त था प त ॥ रु त क थ न ह रु
 व ग दा य ला स सा रि ता ॥ पा र्श्व त र्ज नि ह रु षे । र व ॥ दू ष

[illegible]

॥ नैऋत्या स्यात्तत्र ॥ ॐ ह्रीं क्लीं कुंजुं वृक्षं पञ्चहस्ताय
नागमधिपते यथा दकी ॥ ॐ गन्धर्वस्य दक्षिणे ॥ स्वस्वमर्कन
वलि ॥ ततो जम्बूद्वीपे उने ॥ ॐ ह्रीं क्लीं कुंजुं अजायपादका ॥
पूर्वे ॥ ॐ ह्रीं क्लीं कुंजुं विष्णवाय पादकी ॥ अ
श्रिताय पादकी ॥ दक्षिणे ॥ ॐ ह्रीं क्लीं कुंजुं अथ नाशिता
य पादकी ॥ नैऋत्ये ॥ ॐ ह्रीं क्लीं कुंजुं असुरनीपादका ॥
पश्चिमे ॥ ॐ ह्रीं क्लीं कुंजुं सुसूनिपादका ॥ वायवे ॥

ॐ ॐ ॐ किं मा ह नि पा द की ॥ उ त न ॥ ॐ ॐ ॐ किं मा अ क र्ष
नी पा द की ॥ ॐ सा न ॥ स स मं कु न य लि ॥ ॐ ति ॥ अ कि ण
ज प म ॥ त ता अ रूप त्र य उ नै ॥ ॐ ॐ ॐ किं हे सा स य पा द की
ॐ ॐ ॐ किं अँ अँ न उ कु व क्ता नी पा द की ॥ प र्व ॥ ॐ ॐ ॐ व
षा स ना य पा द की ॥ ॐ ॐ ॐ किं ॐ ॐ प्र व क्षा मा ह स नि पा द
की ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॐ किं म य ता स ना य पा द की ॥ ॐ ॐ ॐ किं उँ उँ व
उ वा गा का मा नि पा द की ॥ द कि ॥ ॐ ॐ ॐ किं ग त्र ज स ना य पा

[illegible]

तथा षड्भानं पञ्च अकि नि पञ्च न॥ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ
अकि नि पाद की॥ पूर्व॥ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ
नि पाद की॥ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ
वैमथ॥ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ
स्वीम॥ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ
उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ
मकु नवल॥ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ

कान पञ्च न॥ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ
लकी॥ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ
उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ
अदि आन पि भय पाद की॥ मथ्य॥ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ
॥ ततो मलद विपञ्च न॥ विमो जलि॥ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ
धेलु त्रिपु मई नि देह सदान दस्ता मां इ स ४ मथ्य हन पाद की
॥ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ
या नि विद मडा॥ ततो उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ उँ

लाम् रक्षा व स्थ तदाः न क व द व त वा थ वि जाल व द न व
स गः घ ष्ठा ला वा ग हा वा ण य द ख लु ज ना म नः स ग म न
नि धा ना थ य व र त म न ग स त थः नि म न श व नि प्रा हा नि धा
न म नि रु द क ४ न स द त थ ना ष्ठा ना य द्वा ट ष क्ता ष क
४ भू त ल्ये श व तं वि द्या द द्या न म थ क स त ४ व गु र्थ वि र्म
हा वि र्मा ४ पाल पि ता स्मि ता ग ग र्थः त गु र्थ स द काल व
लि पू जी नि थ द य त ॥ व ता न रु ग ल पाल दि जा द्या ग द्वा न व

लिः लु ष ग स र प की व ता वा न व लि की दि न नि त्या धि का
नि च ता न ४ क द्या द ष त न रु नः व र्थ ना पि ग क णा व पि ग
थ पि ग ना व न ४ द द्वा क ना ल भू त ग ४ क पाल रु न ना रु ला
४ का ष्ठी न व द्वा र्थि ख लु स ना लि मो न रु ला ष ४ य ष्ठी व रु
सु था क रु दी पे द्वा ये स ग ग ल ४ ता रि ता स रि ता द्वा ष क स प
शा प ना य लेः घ ष्ठा वा द्वा ष्ठी गी ता द्वा सु र्थि ता का स दा सु द्वाः
स रु ना न न स र्वा षां वि थि वि थि व द्वा लि दान त न ४ न द रि द्वा

वैतनापसर्जदि कं रुयः निर्लपमदि तात्रात्रा सर्वेषां व
ल्लुवः ॐ श्री ता न ललत का मा इ सं ग्राम व सदा ग्रयः
ॐ ॐ किं ई अम काय अ व न २ द उ याल महा क ल क पि
ल ज द ल न रा स र वि न उ जाला म ख गंध प र्ण व लि प जी ग
का २ हे न व न प न पु न २ म न २ ख २ ल २ रु २ ह ४ म हा व म
नाथि प न य स्वा हाः ॐ गि व दु ष्म १० व लि ४॥ ॐ किं श्री कं ई
सर्व पि ॥ ७ य पि ७ नि द्वा ना व द्वा न म व व रु शा प रु य स दा हा

४ सर्व दि गुग ग स हि ताः या गि नि या ग वि नं डा त सर्व गुग स
मा ग ता ४॥ ॐ द प र्ण मा हा व कं श्री ना २ अ व न दा म मः य रु क
त्या मा स न दे वि ग पा द र्ण न न ता सर्व सि धि य दा ता म द वि
तं खां रु व न स दाः वि ता नां श्री गि नि नी यः य द्वि ष्य नि म ही त
ल ॥ त ना ग नै व लि द विः स न या श्वा ल म ल कः शु ति स्मृ ति स्म न
४ य पि स्मृ त म दा हि श्री वि तः नि कृ तं य नु द ष्म नां या गि नि नीः
ग न स क लः कू कू का नि कू ख पा नि दू नी मि त्या कू रा पि तः ॥

ॐ का नादि वृथ पि न उ य सा रा प्र की र्ति ताः अ ष थी धा तु स
ना हा दि सा सु वि दि सा सु धः महि प्रा ता ल व क्रा ले स र्व ह्ना ना
क न वृ वः या गि नि या ग य का ना स म ति षु ति सा थ का ४॥
वि न क र्म सु पि न द्रा सु र्व ति षु की द व ता ४॥ सि द्धा ष्व पु ण
का वा र्था सा थ का दि ति सा पि न ४॥ न ग न वा थ गु म वा ज ग
या वा स लि न तः वा पि कृ प षु वृ द्वा ष्म ष्म न मा र म भु लः ना
न रू प थ रा य व व ट रा वि वि धा नि वः ग पि स र्व पि स र्व स र्व

लिं ग द्वा नु स र्व त ४॥ स न ना ग ता ह स र्व थी स र्व म व रु ल य
दा ॥ प र्य त्व न भ या र्था त क नि ष्ठा मि व य न्क र्ता ॥ व लि प ष्य पु
दा न न स र्व तु ला म म वि न्क काः स र्व क र्मा नि सि द्धि नु स र्व दा ष
पु ता न य मि व ष की पु ता द न शी क र्जि का न मा स र्व ॥ ॐ ति
स या व लि ॥ ४॥ ॥ य या व वि ज या व व र य ति वा प नी जि
ताः न द्यारु दा त था ही मा क ला ष्व वा ष क र्ता ॥ दि य जा जि
म हा जा जि सि धि जा जि ग ल ष्व नीः ष्म कि नि का ल ना पि च

उई के नि नि साव नि ॥ ग म्ही नाद्या घ ना ह्ना प्र न वा च उ ला
 र्ही काः री ष ना व म हा न न्दा जाला म् पि न र्थ व द ॥ पि ष्म वि ह ति
 नी षे व ज क शी ध र्म दी रु थाः वि ष ट का स र्व सि दि रु षि ष्ठ क्का
 त र्थे व व ॥ र्हे का लि रा ष्व ग्री दी र्घा ध्वा की क ल ह पि या ॥ मा र्
 गी का क ट षि ष्ठ त था न्क य ल प्राल कि ॥ ना क सि द्धा त ना दा ष्व
 न का की वि ष्व त् पि निः र्थ क ग्री त्री ड र की ष्ठ क्का गी न न हा
 र्ज नि ॥ वी त र उ म हा का लि के का लि वि क ना न ना का टि नी

[illegible]

आपनिप्रयाको॥ उपस समर्थ मङ्गल॥ तो॥ अखन्दमन्दलाक
ल॥ श्रीसर्वतीगा हाका॥ १॥ नमो हेतवाय॥ २॥ श्रीसर्वतीमङ्ग
लान्दं कसपदसहिताः नन्दसक्तिः ४ सहिमा सुखिन्त्यायवत्तु अक
लकलगतैः पञ्च कौद्यान्यमङ्गवत्तात्रयपञ्च कौन्यैरननपिर्वदुतः पाउ
मल्लविष्णोदया सा सुहिमस्थ हसखललकतापिन्दु पृष्ठादामडा ॥
वर्धकीमात्रतूर्यैः पत्रमसिरेकता वक्रदविकामास्था श्रीनार्थवन्दुपूजा
नवनवकर्तैः यगमहदलु सार्नी ॥ प्रितर्त्तसिर्द्धिवतात्र प्रथमकलिपूरा
काङ्कनस्त्राधिकारतः तेषां वैपुत्रसिन्ध्या नवपुत्रवसनं तेषु मस्थदिद

श्री॥ सन्तानैः गमपिन्दु कलकामसकलैः पाउसान्नाकुमानैः आदोर्द्ध
मङ्गलाद्यैः पत्रिभूमविमलैः पञ्चसहावपिन्दु आदावस्त्राकुमानैः क
लकम। सकलैः मङ्गलस्त्रानुपूर्वैः सहकारिप्रियम्यगत्यशूद्रनरकदिद
सिर्द्धिः ४ सिवाग्नेः मस्थविष्णुमले माप्रवमनरुय प्रत्ययैः स्वाधिकारतः स
सुखं यनस्मै नमतिगुत्रवतः हेतवैशीकृष्ण ॥ ॥ ३॥ आसागकिरुग
ख्यापि पथगतिरुता ददताप्रियकाता ॥ ३॥ तस्याः ४ श्रीअडियानं पत्रक
त्रसहितं मस्थसंहैः सुदीर्घां क्रितकिं जालं धराख्यप्रकर्तितनिलय
दक्षिणवैवकालीयामशीयर्ष्यो ॥ १०॥ पञ्चजनरुयकात्यजितं यनवि

स्वा॥ ॐ तस्याऽमु कामत्रयं मदनकलियुतं सर्वसिद्धान्तयुक्तं ॥
लि कोऽनन्तं सप्त संपन्नमग्निकलां कर्तुं यागविन्दुं तन्मन्त्रादि
यालिनां यत्र ससूष कर्तुं विन्दुं त्रयं त्रयं ॥ कौ नित्यानन्दं सत्रयं तदः
यत्रिमथर्षं षट्पुकात्रेण विन्दुं ॥ अविद्याहा (ग) य ग मं मनूरयविम
नं तिथिपि (०) ललाट ॐ वं यार्फं सप्तमं स्थितिलयजननिनूडगकी
स्तीरुदा ॥ ॐ तत्र सुददविभक्तलकुलमयानन्दधामि स्वतः कु ॥
ॐ गत्रया ग्यायिन्दुता पञ्चरयहृती सिद्धिदिवा द्युतपा ॥ कौ नि
त्यकिं चासूत्रकारगमदितपदानन्ददायि पुसिद्धि कौ कर्षे निनूडः

कामान्निषिततपतनी श्री कृष्ण कार्खनमासि ॥ ॥ सन्तानं सन्तमा
र्येन अनायतनुदवता दीर्घमपि ० ॐ कात्रसिद्धान्तयुक्किर्तिताथा
पूषीरुतिगृहवासि वृत्तं वकदमकासकतसुहितं प्राक् अयाव
गृहवासिनि ॥ गृहं वन्दु पूर्णं प्राक् रक्षा मन्त्रानन्तरवधा (ग) त्रयं म
० कादवि वासमार्गं पुकल्पयत् ॥ अन्वयं प्रत्ययं धारि मधि कार्त्रुका
कन ॥ अन्मयुक्कलिलास्तान् स्थितिरु कामलूपकं किलि स्थिक्किनि
वृद्धतु सिद्धिं यदु सागत्रुष्टा हंत स्य ददसिः ज्ञानाति कलक
मः पा ७ साधात्र हदनः न्यासे वदक मनेथा ॥ पूजितं सिद्धि दहृड स्थिति

ध्यायनिव्यदयत् ॥ ॥ ॐ तिर्गणान्तर ॥ ॥ ॐ नमो माहात्म्ये
॥ ॐ नमो सुतो माहात्म्ये सुखदहं पत्रापत्रं नृकाकिनि विस्तृतात्मना
दाखविदु मालिनि ॥ अदहायसमृद्धिं त्यजेत् अथ लविश्वधामिनि ॥ महा
कूळलिनिनी स्रुहसुख्यववहि तं मासमृग्गिनिमथ सुधामया
पिपत्रापत्रं ॐ कात्रविश्रुताय सुहकाताद्वा द्वधामिनि ॥ वात्राग्रजतध
सुखं अर्ननं वा कयवयय ॥ ह कोलाई कला न सुपयकिर्गक माथी
॥ सकलाख्य महामाया वतदला कजित ॥ नृको कनातिमथ सुममामक
करुदिसि ॥ अष्टिर्गक लदवि हदी निवृत्त नथ क ॥ विदुल्ले तानि

दवि रुद्रकूटिला कति ॥ वक्रा विवृणु नृदध ॥ ॐ नमो सदा
वा ॥ नृत्तं पञ्च महाधुता ४ पादमूले यवहिता ॥ तिलाकं जननिदवि न
मसुं अर्ग नृपिनी ॥ ॐ जपि कल मथ सुमनालतन नृपिनि विदुम
थगतादवि कतिल्लार्जवदिक ॥ उषात्रकनिकारु सदा दणनाव
लमिनी ॥ उमाख हर्ग तलेति द्वादशादियवव स ॥ सुन्य सुन्य राव सु
रुमाखाया नधामिनी ॥ लम्बाख्य पत्रमादवि ददिल्लार्जगमिनी ॥
नामा यउ मूरिल्लि मथ सुयुपवर्लिनी ॥ हल्लं धपदमानु तालम
द्वियवहिता ॥ नादेद्यलिक संघृष्ट गूला पृक सन्धिक ॥ सुल्लं सुख

त्वसंक्रुद्धं धर्मव्यर्म्भविदनिनी॥ काञ्चकात्रककर्तृत्वपिसुच
नादगुह॥ पेनात्यपत्रतत्रसुद्धवेतन्यसात्यतं ध्रुवसर्ववर्तुध्रीदवि
गञ्जतत्वेतिविशुतं। सुफिमूलमहाविष्णुविद्विदेविद्वसुमेमन्विता॥
असत्रितमहासायसैसातानेयतानिनी॥ रुयावविद्वपावैव, रुयनि
वायनात्रिता॥ उमृरुविद्वमथस्मै नमस् पापमायलि, वन्धमाककत्रि
दवि, वाउसाकंयवस्मिता॥ ग्रामनिगकि सुत्रन, महायुहसुमन्विता
॥ ग्रामनिग्रामनि, गेति, मायायंरुपवाहिनि॥ स्वकृदहंनविद्वि
काथिधार्म्मरुहेनवि। पक्षसुवर्तुपस्यत्व, यात्रुडाक्षकोरि ताथ

जमताथत्रपनु नमस्कृन्ननरुनयि॥ उषाकटविद्वर्जिकृत्य
नकादिरुयानना॥ नमामिदवदयली अथात्रयात्रयिनी। डा
लामपि वंगवति, उमादविनमस्तुतं॥ यागलिवलिपादविगे
त्रिलक्षीसुतयति। हंसगार्दगदगेमसुविगकि मालिनी॥ कासू
कीभूतगमदवि, दूर्जाकोत्यायनितथा॥ निर्वर्किंनारुमाख्याता, न
कावैकाकतापता॥ वाक्कीमाहंयत्रिजेय, कोमात्रिदेपुवितथा॥ वा
ताहिवेयमाहडो, वासुतायंरुयानना॥ यागलित्वहिदवलिकुलाप
कविउपितं॥ अषासुवधनीदवी, लक्ष्मीत्ववरुपिनी॥ रंङोवेवतु

आग्नेयी या म्याने मलवा नलि ॥ वायु या वैव को व त्रि, ॐ आ निस
मूदा कृता ॥ प्रपा गव न ना को आ, अना हा आ ग र्य निका ॥ व त्रि पु काम
का वैव, द वि का त कु जा रू था ॥ तथा कालि उ मा द वी, द व द ति न म लु
त ॥ रु द कालि म हा द वि, व लु म लु रु या व ह ॥ म हा कू स म हा आ न न
म लु, स कि नू यि लि ॥ रु कु व ४ स मि ला हा न, द या त्वं नु कू नू स म ॥
ह्य ना र्थि ता मा हा मा य नू त र व लु व य दा म ला, व लु ना कू न ल ग का
ग दि त रू, त र व ~~व~~ मे नू मा हा मा या न लु त ॥ दि कू मि व दि त ॥ य सी
त व दं प ० त लु ग, रि स रू व मा व ४ ॥ या प ना ति वि नि ता का मा

न पि ना व पि व लु रू ४ ॥ ॐ ति लि व स कि ल म ल ल त्वं म हा मा या त
वै ल मा र्क ॥ ॥ पि ग क न क क र्ज कि लि कि लि स रू कि कि नो मा
ल गाली ॥ उ या र्थ कू न रू वं स क ल रू य ह न, पा य ह रू क रू ना दी ॥ रु
व क र्म सि ह ना द न न न न व द व र्व न रू थो म त त्वं ॥ रू त य ता दि ना र्थ
गु ह ग ल न मि त रू कू य पालं न मा मि ॥ ॥ न का व लं डालि त पि लु ज
ता क ला प डाला व ति कू ता न द न्ध थ न पु च नु ॥ सूर्या दः य क ल क का
४ न र्म ग र्म र्म र्म ति सूर्य व लु क ना थ म ह न मा मि ४ ॥ ह न र्म र्म र्म र्म

ॐ ह्रीं स्रमि तरुय ह्रीं सर्व विघ्नानां क का या । गं गिं गूं ६ गें ६ ष ६ ग
 ग म ग ति ग ल सि धि स र्वी थ सा धे ॥ ॐ ह्रीं हूं हौं गं ग ल स्र दू गि त
 मू ष ग ल वि घ्न ना धे न म ष न म स ॥ ॥ ॐ का ह्ना नि कि या गं स
 त ग ल मी ता, सा शि या म झ ला र्वा, स र गे त्रि ग म ध र्ग, र ग म दि
 त प दा मा पि का ष ६ मू ६ ॥ ग म पु म्मा सा धि र्ग ॥ ए ह ग ल न मि ण
 हे त वि क र्ण पा ला, सा ल का ल क र्ण यां वि वि ध ग ल र्ता, या गि ति
 ती न मा मि ॥ ॥ उ का ता नि त्र यों ॥ ज थ व न ॥ वा य ॥ पा ता य न पा थ

आ लं रु नि र्मि त्या र्थ स ग म य ति वा ता नी ॥ क मा मु ति ॥ पि त पु ता ॥ न
 का न्या क ॥ उ धि र्ग ॥ ॐ ह्रीं हूं ॐ उ धि र्ग ॥ अ लि नि त्र म खि द वि मा
 त झी नि म हा पि ग म नि ० ० ० ० हूं रु र्ग म ४ स्था हा ॥ ज य न ॥ पा ० या
 य ॥ वा य ॥ अ थ र्ग ॥ व लि वि स त र्ग न ॥ सा क्ति थ य ॥ ॐ ति उ ग र्ग द
 नि त्र प र्ग ॥ थ त वि धि पा द र्ग नू नि त्र ष षि र्ग नू त या य माल ॥ ॥
अथ अरुति क ॐ ख म ल प न या वि ध न ॥ त ल ला व क ॥ र ग व ति या लि
 उ न ॥ अ रु प र्ग म ला कः अ रु ती ह्, प र वा स न र्ग य ॥ थ या द उ त

बेंद क तया॥ खलु पू प का डाल ख म सिलें॥ खलु पू खलु पू स य॥ ॥
 रग वति या ख अ म॥ प्रिकानः पत्की व का क वा य॥ कौ र था पन या य॥ ॥
 रग वति ख अ म॥ का क वा य॥ ख व ल य त य॥ था या द अ न॥ हि ड हा य अ ह
 त सि ज्व ज य था पन या य॥ ॥ पालु दु द का प क या लि डाल ते य॥ ॥
 स घ न थ उ मा डी॥ खलु खलु कू ल न व ता य॥ थ व र ह अ ल पत्की व का
 क वा यः वलि पा त त य॥ ॥ खलु स धा ल सि थ ल न पा या॥ खलु क
 मू री यूरु त सि थ त क दि सि क क प ता का प क प ता का॥ अ र म ल ज
 र म को॥ रु क स्वा न त॥ अ र म को स्वा न व ली स रू लि ह त॥ खलु स र

नि २

का माला स्वा न या माल म य म॥ दे व र ग व ति न व ता य॥ कू मू रू त
 सि रु क स्वा न या माल त य॥ ॥ मा ह रू य माल॥ नि ल या व लि अ र्घ
 पा य त॥ था त ताल लो व क॥ ॥ व ला त ल ना डी॥ प्रि त त ना व म॥
 अ य्रा दि॥ वा क॥ पा ता य न पा ० प रू स्वा य न द वा र्च न पू जा नि मि
 त्या॥ था न श्री कू ल माल कू म हा री न वा य अ र्घ न म॥ ४॥ ॐ ति कू ल
 मा त कू पू जा॥ ॥ नि ल या थ रू त म पि आ त म पू जा॥ खलु सि नू
 हा लः क क॥ या व ध न्द्रा कू म नू म म हि धू अ ग्नि ला व ह॥ ता व त्व
 सु विलें॥ का लं ध न स्वा य सि गो रू ड व॥ सि गो रू व म हा द दि द वा

[illegible]

य पाद को ॥ अत्र ३ ॥ वलि ॥ खद ३ ॥ उं हं ह दया य न म त्वादि ॥ त ता इकु
 त रु ल पू ज्ञा ॥ स दा या रु क ॥ वि था ॥ ष भ ग ॥ वलि ॥ ॥ नि धी न ॥ क्वा य ॥
 ॥ वलि प्र दा नी ॥ व तु व वि व लि ॥ स म य व लि ॥ उ ग्र च व लि ॥ त्वा क म
 हा व लि न धू न क ॥ आ वा ज ॥ मू ज्ञा ॥ त र्प्य न ॥ अ प दि प ॥ ने वा द ॥ आ प
 ॥ स्त्री ग ॥ नि म या कं ॥ य था वा न त्वा दि ॥ अ ग ग न्धा दि ॥ वा कं ॥ पा ता
 य न पा थ ख भ स्त्रा प न द वा र्ध न ~~स्त्रा~~ पू ज्ञा नि मि त्थ र्थ स ग न प ति
 वा ता नां त्वा दि ॥ क मा लु ति ॥ त र्प्य न ॥ नै कौ नै का ॥ उ वि रु ॥ पा १ या य ॥
 ॥ अ रु मि पू नू दि का द को वा ना उ ॥ द न म त पू ज्ञा या य ॥ प्र त प्र ता ॥ ॥

अ थ हा ज ॥ ॥ पि व न खं स स्नान का का य ॥ व लि रु का थ य म त्वा
 व ॥ सा वि ष य ॥ अ ति अ स्मी पू नू या वि धि ४ ॥ ॥ त ता न व मि पू नू या वि
 धि ॥ ॥ पि व ल न व ता उ पू ज्ञा रु थ पू नू या वि धि र्थ या य ॥ व लि ज्ञा त म
 माल ॥ पा १ रु का धू न का उ त य ॥ ॥ द व न ता व ला त कं ॥ इ व न नि
 तं क म धू ज्ञा ॥ क स य त अ रु प उ वा के अ रु धी न ॥ क म या त पि
 को न व रु की ल वा क धी य ॥ कं म या रु व ह श्री पा उ या त वि धी न वा क
 धी य ॥ व लि माल का स्व ष मः क म रु ज्ञा आ दि न व रु दं सि या थं वा य
 वा य उ थं ॥ ॥ द न द व या के व न ना दि पि के र्त्त प ता पं च प ता ॥

धसिङ्गः स्वीतं। पियल कू मू ग्री पाउ स्था थलं कू ली ॥ कू मू ॥
ग्री पाउ व लिवा क वी य ॥ अर्ध पाउ या त ति को न वी के वी य ॥
वित त्वं न नाच म् ॥ अद्या दि ॥ वो कः म हा न मि पा व न क ल कं मू मा
हा पाउ सा ध न नि मि ल्या र्थ न ॥ अ ० दा स ॥ व ति सि दा स ॥ मूल
न दा स ॥ अद्या गा ह न दा स ॥ अल पाउ ॥ अर्ध पाउ ॥ रु त सु धि ॥
आ त म पू जा ॥ कू मू पु का ल ॥ रि ड लं ख ल स लं ॥ ध्रु प रु य ॥ कू मू
या दू ल व गु स म न, कू नः म थ ॥ वि दू ॥ वि क न ॥ नू वि डं लि ष्य य
दू ॥ ग्री पाउ य वी म ह स नान ॥ अलि स नानं कू ली ॥ पाउः वि दू

वि कानः मथ्यः रुं वि डं लि ष्य य दू ॥ ध्रु प रु य ॥ वि धि सा ध न कू
ली ॥ सफि या त र्ज लि वि या नः कू मू स रि ० पू ड य दू ॥ गो गु ॥
ता का त ह नि ला द वि सिं दू ता त न वि गु हा ॥ अफा द म रु जो द वि स
मालं काल रु पि ता ॥ दि गा द म थ ना दू रीः अलि दु य त था प न
दू ॥ स मा त मा रु नि द वि षि ति ति धर का ति नि ॥ द व द द्या व री ला
है नि पू हं काल रु ड नि ॥ रु यं सि ता गा य द ताः पा दू कां पु मू त न
त्री ॥ अ खं दू क र सा ना र्थ क र प त र्ध ना त नी ॥ ख कू दू क र ना मं र्थ नि
द ह कू त र्पि नि ॥ ग्री पाउ सं थ थं प त य दू ॥ कू मू स द का त य ॥

दिक्षि ॥ स्वान सहितं तयशापि देव ॥ ~~वज्रवृक्षि~~ ~~विद्या~~ ~~त्रैलोक्य~~
~~मयति~~ ~~विद्या~~ ~~त्रैलोक्य~~ ~~वज्रवृक्षि~~ ~~विद्या~~ ~~त्रैलोक्य~~ ॥ कूं मू पूजा ॥ वृक्षान्यादि
वज्रवृक्षि ॥ आसना ॥ कूं गूं सिंघासनाय पादकौ ॥ कूं गूं कूल
कूं मासयनुम ॥ तूं गूं आनन्दसुकी हेतवानन्दगीमहाविद्याता
ऊखनी कूं गूं कूल कूं मू रतात्रिकाये पादकौ ॥ पिथ ३ ॥
षडङ्गवृक्षि ॥ अत्रा ॥ सुनयिगंडलि वलि आवा ॥ गूं पाण्य
आ ॥ अत्रि ॥ तौजादि अथाता ॥ तूं कालासयनम ॥ तूं गूं आनन्द
सुकी हेतवानन्दयिताथिपतय सूं गूं ग्रीमहापाण्य रूं ता नि

कायपादकौ ॥ पिथ ३ ॥ षडङ्गवलिः ॥ त्याकमहावलि ॥ आवा
आ ॥ ध्वन ॥ श्रुति ॥ तर्पन ॥ ध्वपदिप ॥ नेयद ॥ आप ॥ मूं स्वाहाः
कूं मूं ॥ मूं स्वाहाः पाण्य ॥ मूं गु ॥ तादातसंनि कूं लोदवि
लादि ॥ का मूं दविद्यानियर्भुलादि ॥ अथावान ॥ वाक ॥ यकाय
क ॥ वलिथ ॥ य ॥ कूं मूं पाण्यथ वरदन ॥ अमरनीय ॥ ॐ तिकूं मूं
पाण्य पूजा ॥ ॥ कानेवलिलोहः गनमद्वात्रैवकूं पूजा ॥ तलपि
अद्वात्रैः दधद्वात्रैः पूजा मज्जातथ ॥ ॥ अथलिगर्भनं निष्पयाथ
॥ ध्वपदिपनेयदः आपः पाण्य ॥ ॐ तिलिगर्भविधि ॥ ४ ॥ तगाद

वार्षनं ॥ शिव तत्त्वनामं म्या ॥ गुरुन स्फार्त्त ॥ डासादिगवंचनैः ॥
 द्यादियाब् ॥ महानवमिः पार्वत्यः षष्ठशगदवाचनपूजा नि
 मिर्थात्थं न ॥ अथाक्रमं पूजा ॥ न्यासादि ॥ जलपात्र अर्घ्य पात्रपू
 जा ॥ रुक्मसूचि आगमपूजा ॥ मालिनिप ॥ यंत्रवलि दद्यात् ॥ माहनि
 रुच्य ॥ अथ साधन ॥ पितृयुतात्नादि ॥ वार्क ॥ आः विः सिः काय ॥ अथ
 सपूजा ॥ अथ केचन सिद्धलसू पूजा ॥ वलि ॥ वार्क ॥ मूडा जप ॥ अथ ॥
 अथ श्री पात्र पूजाः मर्त्या तर्था ॥ पूजा वलि ॥ आवा ज्य ॥ मूडा ॥ जप ॥ अ

॥ अथ गन्धादि ॥ ॥ ततो मूल देवार्चन ॥ लातसापञ्चि मदगलि
 पूर्वया कर्मविना ॥ उक्तुनया कर्मोचनयाय ॥ मलातसा नित्यया उकीनया
 य ॥ ॥ कृमासी ॥ लिहृजा पूजा याय ॥ ककात्रन न्यास ॥ आसन ॥ ध्या
 न ॥ शि यां उलि ॥ षष्ठं ॥ वलि ॥ आवा ज्य ॥ मूडा ॥ ॥ निर्वीक्षका
 य ॥ ॥ तातसा वलि षादविय ॥ मलातसा नित्यया उकीनं षाय ॥
 त्या क महावलि आदिनया डावधने के ॥ आवा ज्य ॥ मूडा वधा ॥ ॥
 थप दिप ॥ माहनि रुच्य ॥ नैव दद्यात् ॥ ॥ जप ॥ मूडा ॥ श्री संवती ॥ अं
 शा सा सफी ॥ ॥ संक्रान्ता महामाया ॥ पिंगाद ॥ ॥ अंशानि ॥ उका ना

कृतायेनमथा ॐ कौ सौ क्रि कृतायेनममामित्रखास ॥ ॐ
 कौ निवृत्तिकृतायेनमम ॥ दगक्रिस ॥ ॐ कौ विद्याकयेनम
 ॥ ॐ ग्व ० स ॥ ॐ कौ यतिस्तु कृतायेनमम ॥ ॐ कौ ज्ञा
 त्तत्वायेनमम ॥ ॐ ग्व ० स ॥ ॐ कौ विद्यातत्वायेनमम ॥ ॐ ग्व
 ० स ॥ ॐ कौ शिवतत्वायेनमम ॥ ॐ सित ॥ लामविलाम ॥ ॐ
 दंग्व ० स ॥ दगंरि सीत ॥ दगया क्रमस गायत्रिक ॥ ॐ प
 यासायविदमह ॥ सर्वतत्वायथोमह तत्वा श्रीवशवा दयात् ॥ ॥

पूनस्तस्मात् ॥ ॐ कौ अर्घपात्रदकन हायमा ॐ कौ पतम
 पातकनासायपम सादौ कृत्स्न स्वाहा ॥ दगया सित ॥ ॐ
 गंरि स क्रि क्रम ॥ ॐ कौ श्रीग अकालिक ॥ ॐ दंपमग ॥ ॐ
 रुट् स्वाहा ॥ दगया सित ॥ अर्घपात्रसुथ दावसमयनक
 ॥ ॥ लषकादाव अद्यादि रूथा निमिर्दिन श्रीग स्वकादव्याये
 ॐ दं कौ कवलै जपदाहयामि ॥ पञ्च गृह्यमेदव्यसिप्रग्वया
 मपहास्यती ॥ अस्मि ॥ स्वर्गसंपर्दि श्रीगु कालिप्रयकृता ॥

महायकं गार्थनयाय ॥ ॥ त्रकवलिरुयं गार्थनयाय ॥
धोत्रदष्टाकतालासं मयमां स न्यायि यावलिंगद्रुमहाद्वी
पसूतकं समसूतं ॥ श्री ययय स्यादद ॥ शिखरकाय ॥ गार्थनयाय ॥
दात्मत्रिकोचनगिरि ॥ सताविसंकागहायकं शिखर ॥ ॥ त्रक
सुदयंतयावनकवलिरियं ॥ उंकीं कुंकीं कुंशीगं कालिकसाग
यसवाहनाय सगनस्य निदाताय त्रकवलिंगद्रुमहाहानस्याह
॥ ॐ त्रकवलिरियविधि ॥ ॥ ७ ॥ देवजय ॥ ग्वयंद्विना

काय ॥ वक्तृकाय ॥ अविनास्या ॥ अस्माविस्तित्यादि ॥ वाकं
ययं किंको ॥ ॥ कायक ॥ वलिरिस्तर्जन ॥ स्वाशककोमकासंत
य ॥ पिनदथूससुसिवाय ॥ आसनतय ॥ शकीसुधंतय ॥ निव
र्धन ॥ ॥ यकापलका ॥ वाक ॥ अस्माय रुत ॥ विध ॥ ३ ॥ रुतवल
विय ॥ सतविय ॥ पुफासात्यादि ॥ दक्षिना ॥ ॥ वाक ॥ देवयानाम
काय ॥ सस्त्रिदूतातामादूतासती ॥ रुवासुद्रसकनतया ॥ उः क
लसु अविस्त ॥ देवतहय ॥ वाक ॥ लषं हाय देवंथमं ॥ उकात्रं वापि

त्यादि॥सकलेन हाया॥वतःसिधुःसाहनिःसग्वनूःथःदवथमं
 सकल्यतियः॥सा न का काय दवम्क॥अवयुर्व॥॥कृष्णल
 रूजा॥थया॥सर्वमंगलमांगलत्यादि॥सतविश्याक्याया॥यति
 धातायनहाल॥यतिष्ठाविद्रुमादि॥आनति कने॥स्रष्टका
 हात्यादि॥रुसकन कने॥पूर्णवतुत्यादिःदवथमं ह्ययांसि
 इमहाय॥त्वमसि पदमत्यादि॥आग्नि हाय॥साक्षि थय॥
 यय १० देव यातं क्राय॥कृष्ण हाय॥लाक्षा न स त्यादि॥थमं
 काया वत र्यनयाय॥मूष ह्यय॥आग्नि वियःतर्पनयाय कं

पात्रकाया आयिथयःथन श्रीपात्रज्ञाना आयित यता त्यादि
 ॥वाक्॥महानमिषावच्य खर्ज हागद यत्नेन कलकृष्णयथ
 मवक्रु निमिषार्थेन त्यादि॥खर्जददवया वा संतय कं॥श्रीपा
 त्रवियाव देव यात्र संकय॥घं ० दमत्र यात्र॥कृष्ण याष कृष्णाग्नि
 नियात विय॥आ॥ॐ कृष्णानि त्यादि॥कं रुया जलि श्रीपात्र सं
 तने॥रुत्रव यातं काय॥आ॥३ जा सां त्यादि॥खर्ज वियःथ डातं का
 यः॥कृष्ण मचा तले॥सक सया तं विय॥लिका यत्र का रू॥॥श्रीपा
 त्र संकं रुया जलि ता न॥देव यात सत्र खं ह्या ताने॥थमं श्रीपात्रज्ञान

का ॥ ॐ स्वा विं सति कु म धा न त्या दि ॥ वा के ॥ का य ला डा डा डा प न य
द य या वा स न य के :

१ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अद्यादि वा केन सह ॥ मासवृक्ष
उः जथा जोगः जथा कर्न मुहुत केः उवातः सत्रैः ज
था त्रासि गती सविततः जथा त्रासि चंद्रमसिः अम
कलगतः अमुकनाम हस्याः न २३ १ मानसः श्री जय प्र
अस्म ३ वख वंधनः पिसाचः चतुर्दसिः माहापावं
यः अस्तनाटिका ॥ कतः वतुकः कागि न्यादिः लम्

दिकालि दध्य चन पुजा निमित्तादि नः ॐ दैकमं
दलपूष्पलाजन समर्प्याग्निन मा ॥ श्रीमं वता
सनानः ॥ उकारः ॥ श्रीखंदचदनः वीरभरीः माहनिः
माहनं कामसंतिद्धिः संलद्रा क ऊल सुथा अंजनं च
कुसीलग्नः माहनं दृष्टिदायकं ॥ जज्ञापवितः ॥ ना
नापुष्यः ॥ दृष्टिः दृष्टि न रत्रयं च वः त्रैलोक्येषुः सुद

सोता ग्यं च कुत्र पंचः दहिमं कृपया सदा : कर्तुपता क
कनाथ तु पता कांच कुङ्गी का पत्रमपि यां सर्व सोता ग्यं दां
सैव गृह्यतां पत्रमभिति ५ अद्वाल विना जन जंग सवै
वेत्तमप जायतः ५ तत्त्वत्वं मया दत्तं : सर्वतु हलं कुत्र
५ सिद्धि वल्लं नाना वल्लं विचित्रांगि सिद्धात्र न
साहिता देवांगत् खितं प्रष्टं सवालं कात्र भति तः या

या गिनी देवै वल्लं समर्पयामि नमः अलं कालं :
दिव्यत्रय समाकुतं वैदितान् समप्रतं अलं कालात्त्व
दं गमनिः श्रीरयं तु सूरभति ॥ ॥

॥ नमो ॥ दसमि रूपा विधि ॥ ॥ त्रितेना च मे ॥ ग्रन्थ स्फा नमः ॥
मार्तु पूजा ॥ वाक् ॥ माहा दसमि पार्व न्य षड्जात्रा द वार्चन निमित्ता धेयो ॥
प्राना यामी ॥ न्यासा दिया डग व दूपा या धेन दे वार्चन ॥ पाठ स स्ता राय वलि ॥ ॥
या व द्योय ॥ धो ते धुन का व वीसि को स स्र लि चो य थो या दे व ने आसन तय ॥ धन
गज मान हर्ष पतय ॥ वेला जुल डग व के गोजो डग व चो ने स्तोत्र ॥ यो यी ति दे व ना सन
वर्ष पुजा माहा यंसा पदा इ स्त काम प्र दा नाय पु न नाय विज यया ॥ त्व गति त्या दि ॥ के
जव तय ॥ अस्त मंत्र न षड् चाल नयाय ॥ षड् पु पुर्न जव षव सि र स धिया व
ल व दूपाय ॥ स्तोत्र दृष्टा मे त्या दि ॥ मा कर् दे जा दे वि दुर्गा त्व उग्र चं दा त्व मय्य

द ॥ हूँ व ने सि म्पाल वलि तय ॥ निवर्चन वाक् वलि विधि मत तया व वलि द्योय
॥ चेत सि धल स ग्न न न व रा व चान दुने दे व या त द्याय ॥ पिने षड् स द्याय वि
पजिलि ॥ धवर्त काय ॥ कुं म्भ ल व दूपाय ॥ स्तोत्र ॥ रा क्षा स त्या दि ॥ आर ति सुत्र
काय ॥ सा धि थाय ॥ फुल सि पाले ॥ दिग ला चर्क ॥ जात्रा याय स्तोत्र ॥ गमन चार्थ
लां भाय ॥ धामाय विज या यच ॥ सत्र पक्षा विना साय पुन राय विज या यच ॥ पि
तो ड ना ड लि हा डाय धव २ धा र्म चो न्य ॥ स्तोत्र ॥ धा र्म बो हल सिल त्वा ड ड ष
॥ धवर्था र्म तय ॥ धो ते धुन का व जव च जव १० द्याय दुने ॥ कु म्भ या अलि काय स्तोत्र ॥

पितृप्रेता॥ अस्ताविसृति॥ अग्निनासो॥ जयीतिका॥ चाक्य॥ विरभोज॥ हंससिल
नवरात्रपुजायास्तुत्यानविय॥ ॐ तिदसमियाविधि॥ ॥ ७५ मर्जितधेच
तुर्वियाय॥ ॥

श्रगःनयउकमानातु॥ तिश्चूत्रहा

वृक्षायनि॥ ॐ श्रवदमं लुला कालं॥ श्रीसम्यर्लमलु
ला नैः लपि॥ नृणासां शक्तिरु॥ संक्राने मन्त्रमालेन॥ ॐ
माहामाया॥ ॥ दिवाकनसः श्रानान् कृया हृदयनन्दन॥
नीलो हूनचया दीपं दृष्टुं नो लने स्वरे॥ उकात्रा॥ वृक्षा
भी॥ षष्ठ्या॥ दिव्यायुष्य॥ स्थामानका॥ वन्द्यकदितिसूद
निप्रियनि॥ सर्वेषा मिह सर्वशुद्धतली शुक्लाम्बनाहा
सिता॥ यस्यास्तदलपा नियमविमला वाञ्छितसिद्धिपदा

तां म्वद महीषाशूत्रपुमथ निरुन्वृत्रस्वत्रिनमाम्य
हं ॥ काकाश ॥ माहाकालं माहात्रादं माहाकृष्णं अलप
हं ॥ सुलनूपमाहाकालं कलुकापालधनकैः षड्भुद
कैः धर्तृदेवैः पिनुशङ्खलनपुहः नमस्तस्मै माहाकालं श
कुसं हात्रकात्रकी ॥ माकैलुया ॥ यादवि ॥ दर्शी नूनवित्र
नः कृतशूगमहिषखलुगचलुमूलु ॥ नीनकूत्रकूवी

शस्मननविदूगतं नृमूदमहं निजूमहं ॥













